

मृत्यु पर जीवन की विजय है पक्षी प्रवास

विश्वमोहन तिवारी



पक्षी प्रवास एक चमत्कार सा ही है। आर्क्टिक टर्न किस तरह पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्रा कर लेती है? ब्लू रॉक पिजन किस तरह हज़ारों कि.मी. दूर अनजाने-अनदेखे स्थानों पर छोड़े जाने के बाद अपने घोंसले में वापिस आ जाते हैं? मात्र 3 ग्राम वज़न वाला मणिकेंट हर्मिगबर्ड एक उड़ान में (बिना उतरे) 1000 कि.मी. की मैक्सिको खाड़ी को पार करता है। पक्षी प्रवास के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालता आलेख...

इस युग में, जिसे हम (अपेक्षाकृत) 'ऊष्ण-युग' कहते हैं, बर्फ तो हमेशा ध्रुव क्षेत्रों में ही रहती है। ग्रीष्म ऋतु के समय निचले ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल जाती है और वहां हरियाली छा जाती है। तभी तो पक्षी ग्रीष्म ऋतु के समय निचले ध्रुवीय क्षेत्रों में प्रजनन करते हैं और बर्फ आने पर प्रवास। किंतु इस पृथ्वी पर 'हिम युग' भी होते हैं जिनमें 90 लेकर 40-50 अक्षांशों तक सदा ही बर्फ जमी रहती है। ऐसा ही एक हिम युग लगभग 30,000 वर्ष पहले आया था। पक्षियों ने ऐसे अनेक हिमयुग पार किए हैं।

एक हिम युग के पश्चात तथा आगामी हिम युग के पूर्व, जब समशीतोष्ण कटिबंध में वर्तमान काल के समान जलवायु रही होगी, तब पक्षी उस क्षेत्र में हज़ारों वर्षों तक प्रजनन करते रहे होंगे। और जब धीरे-धीरे हिम युग आया होगा, तब पक्षियों ने शीतकाल में धीरे-धीरे दक्षिण दिशा की ओर प्रवास करना प्रारंभ किया होगा। पहले यह प्रवास स्थानीय-सा ही रहा होगा, जो बढ़ते-बढ़ते महाद्वीप-पारी हो गया होगा। इसका कारण यह लगता है कि दक्षिण दिशा में बढ़ने के बाद जब पक्षियों को अपने मूल आवास-सा आवास नहीं मिला होगा, तब उन्होंने 'मरता क्या न करता' की तर्ज पर उड़ना जारी रखा होगा। प्रवास की यह अत्यंत सरलीकृत विकास प्रक्रिया है।

प्रवास निश्चित रूप से अधिमानवीय यानी superhuman व्यवहार है। आर्क्टिक टर्न किस तरह पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्रा कर लेती है? ब्लू रॉक पिजन किस तरह हज़ारों कि.मी. दूर अनजाने-अनदेखे स्थानों पर छोड़े जाने के बाद, तुरंत ही अपने घोंसले में

वापिस आ जाते हैं? कुछ पक्षी तो सुरक्षा हेतु रात्रि में प्रवास करते हैं। यह सब चमत्कार ही तो है। पक्षी किस तरह यह चमत्कार करते हैं?

पक्षियों में मानव की आंतरिक घड़ी तथा पांच इंद्रियों से कहीं अधिक इंद्रियां हैं और वे अधिक संवेदनशील भी हैं। एक तो, उन्हें सूर्य की विद्युत चुंबकीय तरंगों के ध्रुवीकरण की दिशा का ज्ञान हो जाता है। इसका उपयोग कर वे संभवतः सूर्य का उन्नतांश ज्ञात करते हैं। उन्नतांश मतलब सूर्य आकाश में कितना दक्षिण में झुका है। और संभवतया आंतरिक समय, स्थानीय समय और उन्नतांश से वे अपनी अपने गृह के सापेक्ष स्थिति की दिशा पता करते हैं।

दूसरे, वे पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का भी उपयोग करते हैं। उनकी खोपड़ी में या नाक के पास एक छोटा चुंबक-सा होता है। ऐसा कह सकते हैं कि वे चुंबकीय कंपास लेकर पैदा होते हैं, जिसका उपयोग वे दिशा ज्ञान के लिए दिन या रात, कभी-भी कर सकते हैं। साथ ही यह संभावना भी है कि वे अपने मूल आवास का चुंबकीय नक्शा याद कर, घर की पहचान के लिए उसका उपयोग करते हों। प्रत्येक क्षेत्र का अपना विशिष्ट चुंबकीय नक्शा होता है।

तीसरे, उनकी खोपड़ी की हायपोथेलेमस ग्रंथि में प्रकाश-संवेदक अंग होते हैं, जिससे वे खोपड़ी से झिर रहे प्रकाश को मापकर दिन और रात की अवधि का अनुपात ज्ञात करते हैं। इसी की सहायता से पतझड़ तथा बसंत ऋतुओं के आगमन का पता कर वे प्रवास या घर लौटने के लिए प्रस्थान करते हैं।

चौथे, उनमें वायु-दाब को सटीक रूप से नापने की



इंडिगो बंटिंग

शक्ति होती है। और पांचवें, शायद वे तूफानों की आहट सुन सकते हैं, जिसकी सहायता से वे तूफानों को यथासंभव टाल सकते हैं, सहायक पवन की दिशा ज्ञात कर सकते हैं।

इन सभी जानकारीयों का उपयोग कर वे 'प्रस्थान' का सही (या कहें शुभ) मुहूर्त निर्धारित करते हैं। रात्रि-उड़ान के लिए वे तारामंडलों की स्थिति का भी उपयोग करते हैं। तारामंडल दिशा ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी हैं किंतु वे एक मोटी-मोटी दिशा ही देते हैं। इसके परिमार्जन के लिए वे अपनी विशेष इन्द्रियों का उपयोग करते हैं।

एक प्रयोग में, इंडिगो बंटिंग के चूजों को एक 'तारामंडल कक्ष' में दिन-रात दिशाहीन उजास में रखा गया। उन्हें न तो सूर्य और न रात का आकाश दिखलाया गया। और जब उनके प्रवास-प्रस्थान का समय आया तब उन्हें एक ऐसे 'तारामंडल कक्ष' में छोड़ा गया, जहां का आकाश उनके प्रस्थान के समय के आकाश जैसा था। ये चूजे प्रस्थान-दिशा को लेकर भ्रमित रहे, यद्यपि इंडिगो बंटिंग रात्रि-प्रवासक ही हैं। सामान्य इंडिगो बंटिंग के युवा सदस्य हमेशा प्रवास-प्रस्थान की लगभग सही दिशा ही चुनते हैं। अर्थात् ये पंछी नक्षत्र मंडल के नक्शे के साथ पैदा नहीं होते वरन इनमें शैशव काल में नक्षत्रों को देखकर, सीखकर पहचानने की सुप्त क्षमता होती है। इसी तरह कुछ पक्षियों (जैसे ब्लू रॉक पिजन) में गंध से अपना परिवेश पहचानने की शक्ति होती है। तापक्रम तथा आहार-सुलभता का भी इस मुहूर्त-निर्धारण में उपयोग किया जाता है।

उपरोक्त जानकारी के आधार पर सही मुहूर्त में, सही दिशा में वे प्रस्थान तो कर सकते हैं, किंतु भटकाव का

संशोधन किस तरह करते हैं? क्योंकि कभी-कभी हवा के झकोरे उन्हें अपने निर्धारित पथ से भटका देते हैं। इस संशोधन को करने को लिए तो वैमानिकों को भी नक्शे या अन्य स्थिति-संकेतकों की आवश्यकता होती है।

ऐसा लगता है कि कुछ पक्षी अपने प्रवास-पथ का मोटा-सा नक्शा जीन्स में लेकर पैदा होते हैं जिसे वे अपने अनुभव से परिमार्जित करते रहते हैं। और कुछ नक्शा पढ़ने की तथा इनके उपयोग की मोटी-सी योग्यता, जैसे समुद्री तट की पहचान, अपने लिए उपयोगी वनों की पहचान आदि, जीन्स में लेकर पैदा होते हैं।

कौन से पक्षी दिन में प्रवास करते हैं और कौन से रात में? उड़ान में शक्तिशाली पक्षी जैसे स्वैलो, स्विफ्ट, हर्मिंग बर्ड, प्लवर आदि दिन में प्रवास करते हैं। इस तरह ये बाज जैसे शिकारी पक्षियों से अपनी रक्षा करते हैं। इनमें से कुछ उड़ान में ही अपना आहार प्राप्त कर लेते हैं, तो कुछ रात्रि में रुककर आहार प्राप्त करते हैं। छोटे तथा कमज़ोर पक्षी जैसे रेन, कोयल या चातक, रेल, विरेओ वगैरह रात्रि में प्रवास करते हैं। कुछ जलचर पक्षी दिन तथा रात दोनों में प्रवास करते हैं।

पक्षी अपने प्रवास के समय किस ऊंचाई पर उड़ते हैं? अलग-अलग पक्षी अलग-अलग ऊंचाइयों पर उड़ते हैं। वैसे अधिकांश पक्षी ज़मीन या पानी की सतह से औसतन लगभग 1500 मीटर की ऊंचाई पर उड़ते हैं। अलबेट्रॉस को 50 मीटर से भी कम की ऊंचाई यथेष्ट होती है। स्वैन्सन बाज की तरह अलबेट्रॉस भी बिना पंख फड़फड़ाए सैकड़ों, हज़ारों कि.मी. का प्रवास करते हैं। किन्तु थर्मलस



अलबेट्रॉस: लहरों पर सवारी

के स्थान पर वे समुद्री लहरों के उतार-चढ़ाव पर चढ़ती हवाओं की सहायता लेते हैं। यहां उनको स्वेन्सन बाजों की तरह थर्मल्स की खोज नहीं करना पड़ती। दूसरे छोर पर, प्रवासी खंजन हिमालय की ऊंचाइयों को पार कर भारत में प्रवेश करते हैं। युरोप में व्हूपर हंस 8000 मीटर की ऊंचाई पर प्रवास यात्रा करते देखे गए हैं। बार-हेडेड गूस हिमालय को 9000 मीटर की ऊंचाई पर पार करते देखे गए हैं, ये भी थर्मल्स का सहारा लेते हैं। ऊंची उड़ान की बात करें तो, र्पैल ग्रिफन गिद्ध 11270 मीटर की ऊंचाई पर 'तैरते' देखे गए हैं।

साहसिक प्रवास

ऐसा नहीं है कि पक्षियों के लिए ये यात्राएं लाल बत्ती रहित तीव्र राजमार्ग ('एक्सप्रेस वेज') पर घटनाहीन यात्राएं होती हैं। मैं तो कहूंगा कि दूर प्रवास को एक दृष्टि से एवरेस्ट की चढ़ाई के बराबर साहसिक भी मान सकते हैं। एवरेस्ट चोटी पर पहुंचने के लिए अनेक विशिष्ट गुण, योग्यताएं और तैयारियां आवश्यक होती हैं, किन्तु एवरेस्ट सफलता के लिए मौसम का खराब न होना नितान्त आवश्यक होता है। पहले यह सब से बड़ा खतरा होता था, किन्तु अब मौसम सम्बंधी जानकारी के नफीस वैज्ञानिक उपकरण इतने सक्षम हो गए हैं कि हिमालय अभियान में मौसम का खतरा बहुत हद तक टाला जा सकता है। किन्तु पक्षियों के पास तो ऐसे सब उपकरण नहीं हैं। चंद मिलीग्राम या ग्राम वजन के पक्षी-मस्तिष्क में जो सहज गुण हैं उन्हीं के बल पर वे हज़ारों किलोमीटर लंबे, अज्ञात आकाश में अत्यंत साहसिक अभियान पर प्रयाण कर देते हैं।

यह संभावना है कि उन्हें समुद्री तूफानों की परा-ध्वनि तरंगें सुनाई देती हों। किन्तु यह अक्सर होता है कि रास्ते में तूफान मिल जाते हैं और तब वे मासूम पक्षी लाखों की संख्या में घायल हो जाते हैं, भटक जाते हैं और मर भी जाते हैं! इस तरह के खतरों को देखते हुए जो साहसिक अभियान सुदूर प्रवासों में मिलते हैं, वे प्रवासन विश्व के सबसे बड़े आश्चर्य ही हैं।

गौर कीजिए, मात्र 3 ग्राम वजन वाला मणिकंठ हमिंगबर्ड

पूर्वी यू.एस. से मध्य अमेरिका तक 3200 कि.मी. के प्रवास के दौरान एक उड़ान में (बिना उतरे) 1000 कि.मी. की मैक्सिको खाड़ी को, मानो एक छलांग में, पार करता है। वास्तव में छोटे पक्षी ही बिना रुके दीर्घतम प्रवास उड़ानें भरते हैं क्योंकि कम वजन को उड़ने के लिए कम वसा खर्च करनी पड़ती है। सामान्यतया एक ग्राम वसा खर्च करके पक्षी 30 मिनट से लेकर 2 घंटे तक उड़ सकते हैं। कूजिनी पक्षी अपने वजन का मात्र 0.5 प्रतिशत वसा खर्च कर लगभग एक घंटा उड़ सकता है। और ये पक्षी प्रवास से पूर्व खा पीकर अपना वजन दुगना तक कर लेते हैं। इस तरह अतिरिक्त वसा द्वारा उनके पास लगभग 2000 कि.मी. लंबी सीधी उड़ान क्षमता जमा हो जाती है। बड़े पक्षी अपना वजन इतना नहीं बढ़ा सकते।

किंतु छोटे पक्षियों को तूफानों और तेज़ हवाओं से अधिक खतरा रहता है। सैण्ड पाइपर तथा प्लवर की प्रजातियां लाखों की संख्या में हैलिफैक्स (उत्तर पूर्वी यू.एस.) से उत्तर पूर्वी ब्राज़ील तक की करीब 3000 कि.मी. की दूरी लगभग 85 घंटे में एक सीधी उड़ान में तय कर लेती हैं। मात्र 20 ग्राम की कृष्ण कूजिनी लाखों की संख्या में पहले तो अलास्का के पश्चिमी तट से न्यू इंग्लैंड के पूर्वी तट पर जाती हैं। (ऐसा लगता है कि हज़ारों वर्ष पूर्व कृष्ण कूजिनी न्यू इंग्लैंड के क्षेत्र में प्रजनन करती होगी, और वहां से प्रवास करती होगी।) फिर न्यू इंग्लैंड से अंध महासागर के ऊपर 3500-4000 कि.मी. की सीधी उड़ान भरकर वेनेजुएला या गुयाना पहुंचकर ही दम लेती हैं। इस समूह की कुछ कृष्ण कूजिनियों का प्रवास अभी पूर्ण नहीं होता क्योंकि वे इसके बाद आगे दक्षिण बोलीविया तथा पश्चिमी ब्राज़ील तक जाती हैं।

प्रवास: अकेले या सामूहिक

एक सवाल यह भी है कि क्या प्रवास में पक्षियों के पूरे परिवार - चूजों सहित - एक साथ प्रयाण करते हैं? जवाब है कि कुछ प्रजातियां, सपरिवार चलती हैं, कुछ नहीं; कुछ प्रजातियों में पहले वयस्क, और बाद में चूजे - बिना किसी वयस्क की सहायता के।



हम अगर *बारटेल्ड गॉडविट* का प्रवास देखें तो दांतों तले उंगली दबा लेंगे। कद में यह *ब्रिसल थाइड कलर्यू* के बराबर (लगभग 40 से.मी.) होता है, किंतु इसकी चोंच *कलर्यू* की वक्र चोंच के विपरीत सीधी और अधिक लंबी होती है। इनका आवास टुंज़ा में पूर्वी साइबेरिया तथा पश्चिमी अलास्का है, और प्रवास क्षेत्र है न्यूज़ीलैंड - बस 11,000 कि.मी. दूर।

इस दूरी को ये *बारटेल्ड गॉडविट* एक उड़ान में पार करेंगे। कभी-कभी सच कल्पना से आगे निकल जाता है। कुछ पक्षी वैज्ञानिकों का मानना है कि *बारटेल्ड*

गॉडविट की यह उड़ान विश्व में सबसे लंबी (नॉन-स्टॉप) प्रवास उड़ान है। *बारटेल्ड गॉडविट* यह चमत्कार कैसे करता है? पहले तो मध्य जुलाई में ही ये पक्षी टुंज़ा छोड़कर दक्षिणी अलास्का में हज़ारों की संख्या में पहुंच जाते हैं। वहां, ज्वार-जनित कीचड़ में सीपियों में रहने वालों 'कवच जीवों' की दावत उड़ाते हैं और इतनी वसा इकट्ठी कर लेते हैं कि वह उनके पूरे भार की आधे से भी अधिक हो जाती है।

फिर अगली तैयारी होने लगती है। उनके गुर्दे, लीवर तथा अंतर्द्वियां अपने पूर्व आकार की एक चौथाई से भी कम हो जाती हैं! अरे भई, जब रास्ते भर कुछ खाना नहीं है, तो पाचन तंत्र की क्या ज़रूरत? अब वे सही हवाओं की प्रतीक्षा करते हैं। जब पतझड़ के नियमित तूफान आकर चले जाते हैं, तब वे दक्षिण के खुले महासागर की दिशा में कूच करते हैं। वे खुद 70 कि.मी. प्रति घंटे के वेग से उड़ते हैं, साथ ही हवाएं भी उन्हें पीछे से धकेलकर 30-50 कि.मी. प्रति घंटे का अतिरिक्त वेग देती हैं।

यदि मौसम धोखा न दे, तो वे बिना खाए, बिना रुके, लगातार उड़ते हुए चार या पांच दिनों में न्यूज़ीलैंड पहुंच जाते हैं। आखिर वे कैसे पहचान जाते हैं कि उन्हें यहीं पहुंचना था, यही उनका गंतव्य था? प्रकृति के साथ एकाकार होकर रहने वाला ही यह रहस्य जान सकता है।

ब्रिसल थाइड कलर्यू के नर तथा मादा तो अलास्का के प्रजनन क्षेत्रों में मई-जून में अपने एक-दो सप्ताह के परहीन चूज़ों को 'रूट मार्च' करवाकर पर्वतों की चोटियों पर ले जाते हैं। अन्य परिवार भी अपने नन्हें चूज़ों को ले आते हैं और वह क्षेत्र एक विशाल 'शिशु उद्यान' बन जाता है। इस सामुदायिक प्रयास में केवल कुछ वयस्क ही बारी-बारी से पहरेदारी का काम करते हैं। इससे सारे वयस्कों को अपने लंबे प्रवास के लिए ईंधन अर्थात् वसा इकट्ठा करने का अवसर मिल जाता है। इसके लगभग चार सप्ताह बाद पहले तो मादाएं उस समुदाय को छोड़कर, सैकड़ों कि.मी. दूर - यूकॉन डेल्टा चली जाती हैं। उसके एक सप्ताह के भीतर ही नर भी ऐसा ही करते हैं तथा सभी वयस्क पूरी तरह से प्रवास की तैयारी (वसा संग्रहण) में लग जाते हैं।

लंबे प्रवास के लिए दक्षिण-पश्चिम दिशा में प्रशांत महासागर

के ऊपर से प्रस्थान कर देते हैं। उसके कुछ सप्ताह बाद किशोर चूजे पूरे विश्वास के साथ अपनी प्रथम यात्रा के लिए कूच करते हैं - जिसका न तो रास्ता मालूम है, न मंज़िल। इन चूज़ों के जीन्स में सारे पथ का कच्चा नक्शा बना रहता है तथा मोटे तौर पर दिशा बोध भी।

इस तरह उन क्षेत्रों में उपलब्ध सारे आहार का सर्वोत्तम उपयोग होता है तथा प्रयाण तिथियों में भिन्नता के चलते पूरी प्रजाति के जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है। इनमें से कुछ का शीतकालीन पड़ाव कोई 5000 कि.मी. दूर हवाई द्वीप समूह के उत्तर-पश्चिमी द्वीपों - लेसन, लिसियान्स्की आदि पर होता है। कुछ तो शीतकालीन पड़ाव के लिए इन द्वीपों पर रुक जाते हैं। और कुछ अपने गंतव्य फीजी, टांगा तथा फ्रांसीसी पॉलीनेसिया आदि के लिए उड़ान भरते हैं। तथा कुछ बिना रुके अपने गंतव्य तक की 8000 कि.मी. की दूरी एक उड़ान में पूरी करते हैं।

इसके अलावा, अनेक पक्षी प्रवास मार्ग पर टपक जाते हैं: कुछ रास्ते की गलती के कारण, कुछ वसा की कमी के कारण, और कुछ पैदायशी कमज़ोरियों के कारण।

यदि मौसम की खराबी या किसी अन्य कारण से जुलाई-अगस्त तक बेरों की उपज कम हो जाए, तब पक्षी पूरी वसा इकट्ठी नहीं कर पाते। शायद इनमें से जिन्हें वसा की कमी तथा अपनी कमज़ोरी का पक्का आभास हो जाता है, वे लेसन आदि हवाई द्वीपों पर ही रुककर संतोष कर लेते हैं। यदि तूफान आ जाए, तब तो लाखों पक्षी भटककर, आहत होकर, शहीद हो जाते हैं। प्रकृति इसी तरह जीवों को सशक्त से सशक्त बनाती है, और प्रकृति के इस आश्चर्यजनक उत्सव में पक्षी पूरी आस्था तथा विश्वास से आनंद मनाते हैं।

गालिब से क्षमा याचना करते हुए, यही कहना है कि 'हज़ारों प्रवास ऐसे कि हर प्रवास पे दम निकले। बहुत देखे मैंने प्रवास लेकिन फिर भी कम देखे।'

यदि पक्षी प्रवास न करते, तो ध्रुव समान जलवायु में ग्रीष्म ऋतु में भी नहीं रह सकते थे। तो क्या वह ध्रुवीय प्राकृतिक संपदा एक दृष्टि से व्यर्थ पड़ी रहती? वहां तो जो प्राकृतिक हरियाली तथा जीवन अभी है वह भी न बचता

और कीट तो अवश्य रहते क्योंकि कीट तो अपनी जीवन क्षमता ध्रुवीय प्रदेशों में भी बरकरार रखते हैं। यदि वहां पक्षी न होते तो कीटों पर नियंत्रण न होता और वे ग्रीष्म की हरियाली को भी न पनपने देते। इस तरह ध्रुवीय क्षेत्रों में भी पक्षियों के रहने से समृद्ध जीवन बना रहता है। इससे पता चलता है कि पृथ्वी पर पक्षियों का कितना अधिक जैविक महत्व है।

क्या आवासी पक्षी प्रवासी पक्षियों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित और सरल जीवन नहीं बिताते? आवासी पक्षियों को प्रवास के सारे खतरे तो नहीं झेलना पड़ते। किंतु भूमध्यरेखीय तथा समशीतोष्ण कटिबंधों में स्तनपायी, मानव, सांप जैसे सरीसृप आदि खतरनाक शिकारी जंतु भी अधिक संख्या में रहते हैं। यहां अंडों तथा चूज़ों को बहुत अधिक खतरा रहता है, जबकि ध्रुवीय क्षेत्रों में ऐसा खतरा बहुत कम है। और जब भी प्राकृतिक या मनुष्य-निर्मित विपदाएं आती हैं तब स्थानीय आवासी पक्षियों को अत्यधिक खतरा हो जाता है, क्योंकि ये पक्षी एक ही तरह के प्राकृतवास में जीना जानते हैं। प्रवासी पक्षी तो दूर उड़कर अपना बचाव कर सकते हैं। आखिर हिम युग जैसी इन्तहाई विपदाओं से बचने के लिए ही तो प्रवास प्रारंभ हुआ था।

प्रवास मृत्यु पर जीवन की विजय है - यद्यपि इसकी बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। औसतन, प्रवास पर निकले कुल पक्षियों में से लगभग दो-तिहाई ही सफल होते हैं। मृत्यु के जबड़ों से जीवन को खींचकर बचाना ही प्रवास है। इन सब प्राकृतिक विपदाओं के बावजूद पक्षी वर्ग प्रकृति में सफलता पूर्वक जीवन यापन कर रहा है। वह खतरनाक प्राकृतिक विपदाओं का सामना तो कर सकता है किंतु मानव द्वारा किए जा रहे प्रकृति के विनाश से सर्वाधिक खतरा पक्षियों को ही है। पक्षी इस हरी भरी पृथ्वी को कीटों पर नियंत्रण कर मरुस्थल होने से बचाते हैं। साथ ही पंछी हमारे लिए खतरा नापने के बैरोमीटर उपकरण सरीखा अत्यंत कठिन काम भी करते हैं। यदि अपने क्षेत्रों से पक्षियों का लोप हो रहा है, तो हमारे लिए भी खतरे की घंटी बज रही है। क्या भोग ने हमें अंधा और बहरा बना दिया है। (स्रोत फीचर्स)

वर्ग पहेली 45 का हल

भा	भा		पा	ई		ह		ट
र		चा	र			वा	ह	न
ही	रा		भा		घा		ठ	
न		अ	सी	मि	त		यो	
ता	प			त			ग	श
	ख		फ	ली	दा	र		क
	वा		न		वा		ला	र
प	झा	व			न	क्शा		कं
र		क्ष		क	ल		क	द